University of Rajasthan
Jaipur

SYLLABUS

(Three/Four Year Under Graduate Programme)

B.A. -Hindi

I & II Semester

Examination-2025-26

As per NEP – 2020

बी.ए. ऑनर्स (हिन्दी) – प्रथम सेमेस्टर
प्रश्नपत्र – आदिकाव्य एवं भक्तिकाव्य

1 क्रेडिट – 25 अंक
6 क्रेडिट – 150 अंक
प्रश्न प्रत्र – 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	1. विद्यार्थियों को आदिकाल और भक्तिकाल की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि परिस्थितियों से अवगत कराना। 2. आदिकालीन और भक्तिकालीन काव्य तथा कवियों से परिचय कराना। 3. आदिकालीन साहित्य के स्वरूप, भाषा एवं शैली की विकास यात्रा से अवगत कराना। 4. भक्तिकालीन साहित्य और भक्ति आन्दोलन की अवधारणा स्पष्ट करना। 5. विद्यार्थियों में संवेदनात्मक अनुभूति विकसित करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	1. आदिकालीन परिवेश : राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगे। 2. आदिकालीन शोध की नवीन दृष्टि का विकास हो सकेगा। 3. भक्तिकाल की सामान्य परिस्थितियों तथा विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे। 4. प्रमुख भक्त कवियों तथा उनकी रचनाधर्मिता से परिचित हो सकेंगे।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ,ब,स) में विभक्त है।
खण्ड – अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।
खण्ड – ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2, इकाई 3 एवं इकाई 4 में निर्धारित पाठ से कुल 04 काव्यांश (एक कवि से एक) आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।
खण्ड – स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबंधात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई – 1

- आदिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- आदिकालीन साहित्य की अन्तरधाराएँ (सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य एवं रासो साहित्य)
- भक्तिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- भक्तिकाव्य की प्रमुख अन्तरधाराएँ (संतकाव्य, सूफीकाव्य, कृष्ण काव्य एवं राम काव्य)

इकाई – 2

ढोला मारू रा दूहा – संपादक नरोत्तम दास स्वामी, सूर्यकरण पारीक, राम सिंह
दोहा संख्या – 8,9,10,19,20,21,37,38,40,49,52,61,69,112,116 = 15

विद्यापति – विद्यापति, संपादक – शिवप्रसाद सिंह
नन्दक नन्दन कदम्बेरि तरुतरे (8)
सुन रसिया अब न बजाऊ विपिन बँसिया (9)
देख देख राधा रूप अपार (10)
चाँद सार लए मुख घटना करु लोचन चकित चकोरे (14)
विरह व्याकुल बकुल तरुवर, पेखल नंदकुमार रे (26)
कुंज भवन से चलि भेलि हे रोकल गिरधारी (36)
सखि हे कतहु न देखि मधाई (55)
सखि हे कि पुछसि अनुभव मोय (102)

नरपति नाल्ह – बीसलदेव रास, संपादक – माता प्रसाद गुप्त – 1,3,4,6,7,8,9,10

Dy. Registrar (Academic) University of Rajasthan JAIPUR

इकाई – 3

कबीरदास

कबीर ग्रंथावली, संपादक – श्यामसुंदर दास, परिमार्जित पाठ – पुरुषोत्तम अग्रवाल

साखी – चेतावनी को अंग

मन को अंग

पद – मन रे जागत रहिये भाई (राग गौड़ी – 23)

पांडे कौन कुमति तोहि लागी (राग गौड़ी – 39)

हम न मरैं मरिहैं संसारा (राग गौड़ी – 43)

काहे री नलिनी तूं कुमिलांनीं (राग गौड़ी – 64)

मन रे हरि भजि हरि भजि हरि भजि भाई (राग गौड़ी – 122)

जायसी – जायसी ग्रंथावली, संपादक – रामचन्द्र शुक्ल

सिंहलद्वीप वर्णन खण्ड, प्रथम 05 दोहे तक

नागमती वियोग खण्ड, प्रथम 05 दोहे तक

तुलसीदास – विनय–पत्रिका

केसव! कहि न जाइ का कहिये (111)

मन पछितैहै अवसर बीते। (198)

मोहि मूढ़ मन बहुत बिगोयो (245)

श्रीरामचरितमानस (बालकाण्ड) (दोहा संख्या 229 से 234)

सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत .... निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़इ प्रीति न थोरि।

इकाई – 4

सूरदास – भ्रमरगीत सार, संपादक – रामचन्द्र शुक्ल

हमारे हरि हारिल की लकरी (52)

निर्गुन कौन देस को बासी (64)

बिन गोपाल बैरनि भई कुंजैं (85)

उर में माखन चोर गड़े (95)

ऊधो मन नाहीं दस–बीस (210)

ऊधो भली करी अब आए (220)

देखियत कालिंदी अति कारी (278)

सँदेसो देवकी सों कहियो (375)

मीरां – मीरां पदावली, संपादक – शंभुसिंह मनोहर

निपट बंकट-छवि नैना अटके (6)

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरौ न कोई (10)

मैं तो गिरधर के घर जाऊँ (12)

राणाजी थे जहर दियो म्हे जाणी (22)

मीरां मगन भई हरि के गुण गाय (23)

जोगिया जी! निसदिन जोऊं बाट (25)

हरि बिन कूँण गती मेरी (38)

सखी री! मेरी नींद नसानी हो (56)

रसखान – रसखान रचनावली, संपादक – विद्यानिवास मिश्र

पद संख्या – 1,2,6,8,11,14,15,31

आन्तरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबंध लेखन (संभावित विषय) 2X15 = 30

• आदिकाल की पृष्ठभूमि (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ)

Dy. Registrar (Academic) University of Rajasthan JAIPUR

- आदिकाल का सीमांकन एवं नामकरण
- भक्तिकाल की पृष्ठभूमि (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ)
- भक्ति के उदय संबंधी विभिन्न मत
- भक्ति के निर्गुण और सगुण रूपों में समानता एवं अंतर
- निर्गुण पंथ और कबीरदास
- 'श्रीरामचरितमानस' का महत्त्व
- सूरदास का वात्सल्य वर्णन
- सूफी मत की विशेषताएँ
- रसखान का कृष्ण–प्रेम
- मीरा की विरह–वेदना

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेन्द, संपादित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास– डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी सूफी काव्य की भूमिका– रामपूजन तिवारी

Dy. Registrar
(Academic)

बी.ए. ऑनर्स (हिन्दी) – प्रथम सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्नपत्र – प्रयोजनमूलक हिन्दी

1 क्रेडिट– 25 अंक
6 क्रेडिट – 150 अंक
प्रश्न प्रत्र – 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	1. विद्यार्थियों में रचनात्मक क्षमता को विकसित करना। 2. विभिन्न क्षेत्रों में भाषा के अनुप्रयोग की परिकल्पना को साकार करना। 3. वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का विकास करना। 4. भाषायी समस्याओं का समाधान करना। 5. हिन्दी में रोजगार के अवसर को बढ़ाना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	1. विद्यार्थियों में हिन्दी में सृजनात्मक लेखन की क्षमता विकसित होगी। 2. कंप्यूटर, सिनेमा, अनुवाद आदि के माध्यम से विद्यार्थियों को नए समाज की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाने का प्रयास किया जाएगा। 3. विद्यार्थियों में अंतरानुशासनिक विषयों की समझ विकसित होगी। 4. अनुवाद के माध्यम से भाषायी संकट दूर होंगे तथा सामाजिक समरसता का विकास होगा।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ,ब,स) में विभक्त है।
खण्ड – अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।
खण्ड – ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 में प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।
खण्ड – स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबंधात्मक प्रश्न हैं, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई 1

कार्यालयी हिन्दी

कार्यालयी पत्राचार का महत्व

कार्यालयी पत्र के प्रकार एवं प्रारूप – आवेदन पत्र, कार्यालय आदेश, परिपत्र, अधिसूचना, ज्ञापन, अनुस्मारक, पृष्ठांकन, निविदा, संकल्प, प्रेस–विज्ञप्ति

इकाई 2

जनसंचार माध्यमों में हिन्दी

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

प्रमुख जनसंचार माध्यमों का परिचय एवं महत्व – समाचारपत्र, रेडियो एवं टेलीविजन

जनमाध्यमों के लिए फीचर एवं विज्ञापन लेखन

फिल्म एवं पटकथा लेखन

पुस्तक एवं कला समीक्षा

इकाई 3

कम्प्यूटर में हिन्दी

कम्प्यूटर का सामान्य परिचय

कम्प्यूटर में हिन्दी का प्रयोग एवं संभावनाएँ

हिन्दी से संबंधित सॉफ्टवेयर एवं वेबसाइट

सोशल मीडिया पर हिन्दी लेखन कौशल – ब्लॉग, फेसबुक, ट्विटर

हिन्दी की वेब पत्रकारिता (ई–समाचारपत्र, ई–समाचार चैनल, ई–पत्रिका के संदर्भ में)

इकाई 4

अनुवाद एवं पारिभाषिक शब्दावली

अनुवाद – परिभाषा एवं महत्व, अनुवाद की प्रक्रिया

अनुवाद के प्रकार – शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, सारानुवाद

अनुवाद की समस्याएँ

पारिभाषिक शब्दावली – परिभाषा एवं विशेषताएँ, वर्गीकरण – स्रोत, रचना एवं प्रयोग के आधार पर

विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली

आंतरिक मूल्यांकन 2X15 = 30

पाठ्यक्रम में निर्धारित विषयों में से किन्हीं दो विषयों पर विस्तृत लेख।

<u>अनुशंसित ग्रंथ–</u>

1. जनसंचार माध्यमों में हिन्दी साहित्य– दर्शना जी. वैश्य, विनय प्रकाशन, अहमदाबाद
2. भाषा के विविध रूप और अनुवाद– प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
3. प्रयोजन मूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रकिया और स्वरूप – कैलाशचन्द्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
5. आधुनिक जनसंचार और हिन्दी– हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
6. कम्प्यूटर के डाटा प्रस्तुतिकरण और भाषा सिद्धांत– पी. के. शर्मा, डायनामिक पब्लिकेशंस, नयी दिल्ली

5

Dy. Registrar (Academic) University of Rajasthan JAIPUR

बी.ए. ~~ऑनर्स~~ (हिन्दी) – द्वितीय सेमेस्टर
प्रथम प्रश्नपत्र – कहानी एवं उपन्यास

1 क्रेडिट – 25 अंक
6 क्रेडिट – 150 अंक
प्रश्न प्रत्र – 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	1. विद्यार्थियों में कल्पना शक्ति और विश्लेषणात्मक योग्यता का विकास करना। 2. कथा साहित्य के विश्लेषण की समझ और संवेदनात्मक अनुभूति का विकास करना। 3. प्रमुख कथाकारों एवं उनकी रचनाधर्मिता का परिचय कराना। 4. कहानी तथा उपन्यास कला को विकसित करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	1. जीवन की यथार्थ अनुभूति से परिचय हो सकेगा। 2. कथा लेखन तथा उसके प्रभाव का विश्लेषण सम्भव हो सकेगा। 3. आदर्श और सभ्य नागरिक बन सकेंगे। 4. आत्माभिव्यक्ति की भावना विकसित हो सकेगी तथा भावी लेखन की पृष्ठभूमि का विकास होगा।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ,ब,स) में विभक्त है।

खण्ड – अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।

खण्ड – ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2 एवं इकाई 3 में निर्धारित पाठ से एक–एक अवतरण (एक कहानी से एक) तथा इकाई 4 से दो अवतरण (उपन्यास) आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।

खण्ड – स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबंधात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई – 1

कहानी – परिभाषा एवं तत्त्व

हिन्दी कहानी – उद्‌भव एवं विकास के प्रमुख चरण

उपन्यास – परिभाषा एवं तत्त्व

हिन्दी उपन्यास – उद्‌भव एवं विकास के प्रमुख चरण

इकाई – 2

उसने कहा था	–	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
पूस की रात	–	प्रेमचन्द
आकाशदीप	–	जयशंकर प्रसाद
परदा	–	यशपाल

इकाई – 3

राजा निरबंसिया	–	कमलेश्वर
गदल	–	रांगेय राघव
सिक्का बदल गया	–	कृष्णा सोबती
तिरिछ	–	उदय प्रकाश

Dy. Registrar (Academic) University of Rajasthan JAIPUR

इकाई – 4

ग्लोबल गाँव के देवता (उपन्यास) – रणेन्द्र

आंतरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबन्ध लेखन (संभावित विषय) 2X15 = 30

- कहानी एवं उपन्यास के स्वरूप में समानता एवं अंतर
- हिन्दी कहानी के प्रमुख आन्दोलन – नयी कहानी, सचेतन कहानी, समानान्तर कहानी, साठोत्तरी कहानी, समकालीन कहानी
- प्रेमचन्द की कहानी कला
- पाठ्यक्रम में निर्धारित किसी एक कहानी की मूल संवेदना एवं शिल्प–विधान
- उपन्यास के प्रकार (सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक)
- हिन्दी उपन्यास : विकास के चरण
- हिन्दी उपन्यास परम्परा में प्रेमचन्द का महत्व

<u>अनुशंसित ग्रंथ–</u>

1. ग्लोबल गांव के देवता – रणेन्द्र
2. मानसरोवर भाग–1 – प्रेमचन्द
3. हिन्दी उपन्यास का इतिहास– गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास– रामस्वरूप चतुर्वेदी
5. हिन्दी कहानी का विकास– मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. कहानी : नई कहानी– नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. कहानी की रचना प्रक्रिया– परमानन्द श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

(हिन्दी)
बी.ए. ~~ऑनर्स~~ – द्वितीय सेमेस्टर (हिन्दी)

द्वितीय प्रश्नपत्र – हिन्दी भाषा–संरचना

1 क्रेडिट – 25 अंक
6 क्रेडिट – 150 अंक
प्रश्न प्रत्र – 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	1. विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा और लिपि के विकास यात्रा की अद्यतन जानकारी प्रदान करना। 2. हिन्दी की संवैधानिक स्थिति एवं वर्तमान परिदृश्य का परिचय प्रदान करना। 3. हिन्दी का वैश्विक स्तर पर विकास और प्रसार करना। 4. विभिन्न बोलियों तथा देवनागरी लिपि की जानकारी साझा करना। 5. भाषायी समस्याओं का समाधान करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	1. भाषा के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप को जाना जा सकेगा। 2. भाषा को सीखने की प्रक्रिया में भाषागत मूल्यों को व्यावहारिक रूप दिया जा सकेगा। 3. विद्यार्थियों को व्यवसाय के नवीन अवसर मिलेंगे। 4. राजभाषा के विकास में अतुलनीय योगदान दिया जा सकेगा।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ,ब,स) में विभक्त है।

खण्ड – अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।
खण्ड – ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 में प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।
खण्ड – स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबंधात्मक प्रश्न हैं, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई 1

हिन्दी भाषा : उद्भव एवं विकास

हिन्दी' शब्द की व्युत्पत्ति, हिन्दी भाषा का उद्भव एवं विकास–क्रम

हिन्दी की प्रमुख शैलियाँ – उर्दू, रेख्ता, हिन्दुस्तानी

हिन्दी की उपभाषाएँ और बोलियाँ (क्षेत्र एवं विशेषताएँ)

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ और मानकीकरण

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इकाई 2

राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी

स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी की भूमिका (प्रमुख व्यक्तियों एवं संस्थाओं के संदर्भ में)

राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति, राजभाषा अधिनियम (1963 एवं 1967)

संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी : प्रयोग एवं समस्याएँ

इकाई 3

हिन्दी शब्द–संरचना

हिन्दी शब्द भण्डार – तत्सम, तद्‌भव, देशज, विदेशी

पर्यायवाची एवं विलोम शब्द

व्याकरण कोटियाँ – लिंग, वचन, कारक, पुरुष एवं काल

शब्द निर्माण की प्रक्रिया – उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास

इकाई 4

हिन्दी वाक्य–संरचना

वाक्य – परिभाषा एवं स्वरूप

वाक्य के प्रकार – अर्थ के आधार पर (विधिवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, आज्ञार्थक, विस्मयादिबोधक, इच्छार्थक, संकेतार्थक, संदेहार्थक)

संरचना के आधार पर (सरल, संयुक्त एवं मिश्र)

विराम चिह्न और उनका प्रयोग

आंतरिक मूल्यांकन 2X15 = 30

पाठ्यक्रम में निर्धारित विषयों में से किन्हीं दो विषय पर विस्तृत लेख।

<u>अनुशंसित ग्रंथ–</u>

1. आधुनिक भाषा विज्ञान– कृपाशंकर सिंह/चतुर्भुज सहाय, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
2. भाषा के विविध रूप और अनुवाद– प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
3. हिन्दी भाषा का स्वरूप विकास– डॉ. जगत पाल शर्मा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
4. हिन्दी भाषा संरचना– भोलानाथ तिवारी
5. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र– कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR